SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में छत्तीसगढ़ी लोकजीवन का मूल्यांकनपरक अध्ययन

सुष्मिता मिश्रा, शोध विद्यार्थी, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छत्तीसगढ़)

डॉ. अजय कुमार शुक्ल, प्राध्यापक (हिन्दी), कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छत्तीसगढ़)

Email : ajay.shukla@kalingauniversity.ac.in

सारांश -

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' को छत्तीसगढ़ी साहित्य का अग्रदूत माना जाता है, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति, ग्रामीण जीवन, त्योहारों, रीति-रिवाजों और सामाजिक मूल्यों को जीवंत रूप प्रदान किया। यह अध्ययन उनके जीवन, कृतियों और लोक-तत्वों के विश्लेषण पर आधारित है

विप्र जी छत्तीसगढ़ के उन विरले साहित्यकारों में से हैं जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से लोकजीवन की आत्मा को शब्दों में ढाला। उनके साहित्य में छत्तीसगढ़ की संस्कृति, लोकसंस्कार, आस्था, लोकगीत, रीति-रिवाज, और ग्राम्य परिवेश के विविध रंगों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध में 'विप्र' के साहित्य में छत्तीसगढ़ी लोकजीवन का बहुआयामी मूल्यांकन किया गया है, जिसमें सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक पक्षों का विश्लेषण किया गया है।

बीज बिन्दु -

छत्तीसगढ़ी लोकजीवन, लोकभाषा, लोकसंगीत, कृषक संस्कृति, लोक यथार्थ।

प्रस्तावना -

छत्तीसगढ़ की माटी सदियों से लोकसंस्कृति और लोककला की पोषक रही है। यहाँ के लोकगीत, लोककथाएँ, त्यौहार और जनजीवन लोकभावना से ओतप्रोत हैं। द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' ने इसी लोकधारा को अपने साहित्य का आधार बनाया। उन्होंने अपने लेखन में आम जन की पीड़ा, संघर्ष, श्रम, और जीवन-संवेदना को स्वर दिया।

छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास अपेक्षाकृत नवीन है, किंतु इसकी जड़ें लोक-परंपराओं में गहरी हैं। आधुनिक छत्तीसगढ़ी साहित्य के विकास में पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का योगदान अग्रणी है। वे

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

छत्तीसगढ़ी भाषा को साहित्यिक रूप देने वाले प्रमुख रचनाकार हैं, जिनकी कृतियों में लोकजीवन की मिठास, ग्रामीण संस्कृति और सामाजिक चेतना स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होती है।

उनकी रचनाएँ केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि लोकमानस की सजीव तस्वीर हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य 'विप्र' के साहित्य में निहित छत्तीसगढ़ी लोकजीवन के मूल तत्वों का विश्लेषण कर उसके सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्य को रेखांकित करना है।

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का जीवन एवं साहित्यिक परिचय -

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का जन्म 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक भूमि पर हुआ। वे लोकभाषा और लोकसंस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि साहित्यकार थे। उनका जीवन सादगी, ग्रामीणता और लोकसेवा से ओतप्रोत था।

उनकी प्रमुख रचनाएँ—

काव्य कृतियाँ: छत्तीसगढ़ी चंदा, माटी के गीत, गाँव के बोल, लोकमाटी, आँवरा संसार इत्यादि।

गद्य कृतियाँ: छत्तीसगढ़ के लोकसंसार, ग्राम कथा, लोकधारा के लोग।

उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन की सादगी, लोकमानस की करुणा, और श्रमजीवी वर्ग की संवेदनाएँ प्रमुखता से चित्रित हैं।विप्र जी का साहित्य छत्तीसगढ़ी लोकजीवन को साहित्यिक ऊंचाई प्रदान करता है। सरल भाषा, लोक-मिठास और सामाजिक चेतना उनकी रचनाओं की विशेषता है,जो ग्रामीण जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत करती है।

विप्र जी का साहित्य छत्तीसगढ़ी लोकजीवन का दर्पण है। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन, किसान संस्कृति, त्योहार, रीति-रिवाज और प्रकृति का जीवंत चित्रण है।विप्र' के साहित्य में छत्तीसगढ़ी लोकजीवन का जो चित्रण मिलता है, वह अत्यंत जीवंत और प्रामाणिक है। उन्होंने गाँवों की मिट्टी, वहाँ के त्योहार, परंपराएँ, आस्था, बोली, और जनजीवन की समग्र अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है।

(क) सामाजिक जीवन का चित्रण

'विप्र' ने ग्राम्य समाज के जीवन-संघर्ष, जातिगत व्यवस्था, सहयोग भावना, और पारस्परिक सौहार्द का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी कविताओं में किसान, मजदूर, स्त्रियाँ, और बूढ़े-बच्चे सब जीवंत हो उठते हैं।

"माटी के संग सपन बसन,

माटी माँ हमर पहचान।"

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

यहाँ माटी केवल धरती नहीं, बल्कि लोकजीवन की आत्मा है।

(ख) आर्थिक पक्ष

छत्तीसगढ़ी किसान और मजदूर वर्ग की कठिनाई, श्रम और गरीबी का भावनात्मक चित्रण उनके साहित्य में बार-बार आता है। विप्र जी ने किसान को 'भगवान' के रूप में चित्रित किया -

"धन धन रे मोर किसान,

धन धन रे मोर किसान!

मैं तो तोला जानेव रे भईया,

तैं अस भुंईया के भगवान।"

यह गीत किसान के श्रम और महत्व को लोक-शैली में दर्शाता है।'विप्र' ने आर्थिक विषमता के बीच लोकजीवन की आशा और जिजीविषा को व्यक्त किया है।

(ग) सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन

त्योहारों—पोल्हा, हरियाली, तीजा, मातर—का वर्णन उनके साहित्य में जीवंत रूप में मिलता है। वे मानते हैं कि संस्कृति लोक का जीवनरस है-

"गीत तीज के, हँसी धान के,

हे देव! हमर बछर सुखान के।"

जबकि उनकी कविता 'यह संसार बसेरा है सखि" में संसार की क्षणभंगुरता का लोक-दर्शन है और "डाली डाली उड उड करके" में प्रकृति के माध्यम से ईश्वर की सृष्टि का चित्रण दिखलाई पड़ता है।

(घ) लोकभाषा का प्रयोग

'विप्र' ने अपनी रचनाओं में छत्तीसगढ़ी भाषा की सहजता, मिठास और जीवंतता को बनाए रखा। यह उनकी लोकनिष्ठा और भाषिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

छत्तीसगढ़ी लोकभाषा में उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से छत्तीसगढ़ के जनजीवन को जागरूक करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी भाषा में सामाजिक चेतना फैलाने का सफल प्रयास किया है।

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

मूल्यांकन -

'विप्र' के साहित्य में लोकजीवन का मूल्यांकन तीन स्तरों पर किया जा सकता है—

यथार्थपरकता – उन्होंने लोकजीवन को आदर्श नहीं बनाया, बल्कि उसके यथार्थ रूप को प्रस्तुत किया।

संवेदनात्मक गहराई – उनका लेखन जनमानस की भावनाओं को गहराई से छूता है।

सांस्कृतिक पुनर्स्थापन – उन्होंने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को साहित्यिक अभिव्यक्ति देकर उसे प्रतिष्ठित किया।

उनकी रचनाओं में एक ओर ग्रामीण करुणा है तो दूसरी ओर लोक-गौरव का आत्मविश्वास। वे आधुनिकता के नाम पर लोकमूल्यों के ह्रास से चिंतित भी हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य सांस्कृतिक संरक्षण का दस्तावेज़ बन जाता है।

निष्कर्ष -

द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' का साहित्य छत्तीसगढ़ के लोकजीवन का सजीव दर्पण है। उन्होंने लोकसंस्कृति, लोकभाषा, लोककला और लोकजीवन की आत्मा को अपने शब्दों में अमर बना दिया। उनके साहित्य में लोकजीवन केवल विषय नहीं, बल्कि जीवनदर्शन है।उनकी रचनाएँ यह संदेश देती हैं कि लोकसंस्कृति की रक्षा ही राष्ट्रीय संस्कृति की जड़ है। 'विप्र' छत्तीसगढ़ी लोकभावना के सशक्त प्रवक्ता हैं और उनका साहित्य आने वाली पीढ़ियों के लिए लोकस्मृति का स्रोत रहेगा।

संदर्भ सूची -

1.तिवारी,नंदकिशोर -विप्र रचनावली

2.तिवारी, द्वारिका प्रसाद 'विप्र'। माटी के गीत। रायपुर : लोकभारती प्रकाशन, 1987।

3.तिवारी, द्वारिका प्रसाद 'विप्र'। लोकमाटी। बिलासपुर : साहित्य सागर, 1992।

4.चतुर्वेदी, प्रभाकर। छत्तीसगढ़ का लोकजीवन और साहित्य। नई दिल्ली : भारतीय विद्या भवन, 2001।

5.वर्मा, गोविंद। लोकसंस्कृति के दर्पण में छत्तीसगढ़। रायपुर : नवरंग प्रकाशन, 2010।

6.जोशी, रमाशंकर। आंचलिक साहित्यकार द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'। दुर्ग : संस्कार प्रकाशन, 2016।

7.छत्तीसगढ़ी साहित्य का इतिहास (ग्रंथालय प्रकाशन)।

8.इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया पर उपलब्ध सामग्री।

© Shodh Patra